B - 4
L - 18
Indian Society

वैश्वीकरण का भारतीय धर्म पर प्रभाव

भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ भारतीय समाज और संस्कृति का वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा वैश्विक समाज एवं संस्कृति के साथ जुड़ाव की प्रक्रिया को वैश्वीकरण की संज्ञा दी जाती है।

भारत में मुख्यतः 1991 के आर्थिक सुधार के साथ प्रारम्भ वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है जिनमें धर्म भी एक प्रमुख पक्ष है।

वैश्वीकरण का धर्म पर प्रभाव को दो भागों में बांट कर देखा जा सकता है-

(A) सकारात्मक प्रभाव

(B) नकारात्मक प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव :-

1- वैश्वीकरण- आधुनिक शिक्षा का प्रसार तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार- फलतः धर्म का तार्किकरण और धर्म से संबंधित अंधविश्वास एवं रूढ़िगत मान्यताएं कमजोर

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

2. वैश्वीकरण - बाजार अर्थव्यवस्था का संचार एवं क्रान्ति।

फलतः धर्म का बाजारीकरण एवं धर्म का प्रचार-प्रसार तीव्र, स्थानीय धार्मिक परंपराओं का राष्ट्रीयकरण एवं उन्हें एक नई पहचान प्राप्त।

3. वैश्वीकरण जनित पहचान का संकट - धर्म का बाजारीकरण - फलतः धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद में वृद्धि

↓

फलतः मानव की भलाई में धर्म के सकारात्मक पक्षों का प्रयोग पुनः प्रारंभ (बाबा रामदेव द्वारा योग एवं आयुर्वेद का प्रचार, पंडित रविशंकर द्वारा आर्ट ऑफ लिविंग का प्रचार, धार्मिक त्यौहारों के पुनः प्रचलन से समाज के नैतिक स्तर में वृद्धि)

4. धर्म लोककल्याणकारी राज्य के रूप में क्रियाशील, व्यक्ति के पहचान संकट का समाधान संभव आदि।

5. वैश्वीकरण - उपभोक्तावाद फलतः प्रतिस्पर्धा एवं व्यक्तिवादिता में वृद्धि।

- और - पारिवारिक विघटन, एकाकीपन तथा मानसिक तनाव एवं कुंठा में वृद्धि।

⇓

व्यक्ति के तनाव एवं कुंठा को दूर करने के साधन के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि और ढेर सारे कल्ट एवं सेक्ट का विकास।

(B) नकारात्मक प्रभाव

1- वैश्वीकरण - बाजार अर्थव्यवस्था द्वारा धर्म का बाजारीकरण -

फलतः धर्म में ढेर सारे बाबाओं और पुजारियों का उद्भव एवं धर्म के नाम पर शोषण तथा धर्म में बाह्य आडम्बर में वृद्धि और उनका मौलिक पक्ष कमजोर

2. वैश्वीकरण - पहचान का संकट - धर्म के महत्व में वृद्धि ⇓

फलतः धर्म का राजनीतिकरण, धार्मिक कट्टरतावाद एवं साम्प्रदायिकता में वृद्धि।

3. वैश्वीकरण - धार्मिक कट्टरतावाद एवं धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद में वृद्धि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

फलतः धर्म के अन्तर्गत अंधविश्वास का पुनःप्रचलन और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कमजोर

4. वैश्वीकरण- आर्थिक विषमता, गरीबी एवं वंचन में वृद्धि और वंचित समूहों द्वारा धर्म के आधार पर संगठित होकर दबाव समूह के रूप में क्रियाशील।

⇓

फलतः साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरतावाद एवं धार्मिक आतंकवाद में वृद्धि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय धर्म को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है परन्तु यहाँ उल्लेखनीय है कि-

यहाँ नकारात्मक प्रभाव संक्रमणकालीन अवस्था के परिणाम है जो परिपक्व आधुनिकता के विकास के साथ स्वतः समाप्त हो जाएंगे।

भारत में धार्मिक रूढ़िवाद

- धार्मिक रूढ़िवाद का अर्थ
- धार्मिक रूढ़िवाद के लक्षण
- धार्मिक रूढ़िवाद का दुष्परिणाम
- धार्मिक रूढ़िवाद का कारण
- मूल्यांकन एवं सुझाव

धार्मिक रूढ़िवाद का अर्थ

⇓

PDF Notes

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR